

बहु-सांस्कृतिक समाज का विद्यालयों पर प्रभाव

विश्वास*

शिक्षा मनुष्य की सृजनात्मक क्षमताओं की विभिन्न संभावनाओं को खोजने हेतु उसे निरंतर प्रेरित करती है। एक सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा के लक्ष्य, उद्देश्य आवश्यक तौर पर मानव की इस सृजनात्मकता से जुड़े रहते हैं। शिक्षा की इस प्रक्रिया में भाग लेने वाले विभिन्न सदस्यों (छात्र, अध्यापक, प्रबंधक अथवा समुदाय के अन्य सदस्य) का संबंध भी अपने सृजनात्मक विकास हेतु अपनी संस्कृति से जुड़ा होता है। प्रायः यह संबंध बहु-आयामी होता है। शिक्षा और संस्कृति दोनों एक-दूसरे को निरंतर प्रभावित करते रहते हैं।

डीवी कहते हैं कि विद्यालय एक लघु समाज है और समाज एक महाविद्यालय है। ये दोनों परस्पर भिन्न प्रतीत होते हुए भी मूलतः अभिन्न हैं। एक शिक्षक, समाज का एक सदस्य होता है। एक अभिभावक, समाज का एक सदस्य होता है। एक विद्यार्थी भी समाज का एक सदस्य होता है। कई बार ये हमें भिन्न-भिन्न प्रतीत होते हैं। परंतु ये एक व्यापक फलक के अंग ही हैं, जैसे— दृष्टिहीनों का हाथी; कोई उसका कान पकड़ता है, कोई उसकी पूँछ पकड़ता है और कोई उसका पैर पकड़ता है। परंतु वह मूलतः हाथी ही है। विभिन्न पक्षों और अंगों से मिलकर ही हाथी का निर्माण होता है। अलग-अलग वह अस्तित्व-विहीन है। इसी प्रकार समाज का भी विभिन्न अंगों से मिलकर निर्माण होता है। समाज के अंगों को अलग-अलग करके नहीं देखा जा सकता। उनका अस्तित्व सामूहिकता में है। शिक्षा का जो मूल है, वही अन्ततः समाज के लिए, समाज के सदस्य के लिए और समाज के सदस्यों के द्वारा ही होता है। डुप्रीज और डुमा (2006) कहते हैं कि समाज का विद्यालय पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। समाज में उपस्थित असमानता का प्रभाव विद्यालय में भी देखने को मिल सकता है। इसकी पड़ताल करने के लिए प्रस्तुत शोध की रूपरेखा तैयार की गई है। यह शोध पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक बहु-सांस्कृतिक नगर देवबंद में किया गया है। समय और शोधकर्ता की सीमाओं के चलते बहु-सांस्कृतिक समाज के विद्यालयों पर प्रभाव को देखने के लिए केवल विद्यालय की दीवारों पर वहाँ के समाज का क्या प्रभाव पड़ रहा है, यह देखने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

शिक्षा न केवल व्यक्ति को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाती है, बल्कि उसे भीतर से रूपांतरित भी करती है। कोई भी

शिक्षा अपने समाज एवं संस्कृति से अपने एक स्वरूप का निर्धारण करती है। आमतौर पर शिक्षा को कुछ विचारक सामाजिक उप-व्यवस्था मानते हैं जबकि

* सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

कुछ विचारक उसे संस्कृति के हस्तांतरण का माध्यम मानते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कृति का विचरण तथा अन्तरण करने की प्रक्रिया शिक्षा के द्वारा ही पूरी होती है। किसी बहु-सांस्कृतिक संदर्भ में यह सवाल इसलिए और महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वहाँ विद्यार्थी या बच्चा कौन सी संस्कृति से ज्यादा प्रभावित होगा; जो उसके परिवार में है या जो उसके वातावरण में है या फिर जो उसके विद्यालय में है। कभी-कभी ये तीनों एक ही संस्कृति का वहन भी कर सकती है। परंतु यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि बहु-सांस्कृतिक परिवेश का मतलब ही यह है कि वहाँ बच्चा एक से ज्यादा संस्कृतियों के संपर्क में आता है। तो फिर यह सवाल उठना लाजिमी है कि बहु-सांस्कृतिक परिवेश में आखिर शिक्षा व्यवस्था की स्थिति क्या हो सकती है और वह किन-किन कारकों से प्रभावित हो सकती है।

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

शिक्षा और संस्कृति-शिक्षा मनुष्य की सृजनात्मक क्षमताओं की विभिन्न संभावनाओं को खोजने हेतु उसे निरंतर प्रेरित करती हैं। एक सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्य आवश्यक तौर पर मानव की इस सृजनात्मकता से जुड़े रहते हैं। शिक्षा की इस प्रक्रिया में भाग लेने वाले विभिन्न सदस्यों (छात्र, अध्यापक, प्रबंधक अथवा समुदाय के अन्य सदस्य) का संबंध भी अपने सृजनात्मक विकास हेतु अपनी संस्कृति से जुड़ा होता है। प्रायः यह संबंध बहु-आयामी होता है। शिक्षा की पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यसामग्री आदि एक प्रकार से सांस्कृतिक सामग्री ही होती है। अतः इन दोनों की अन्तःक्रिया एक स्वाभाविक प्रक्रिया बनी रहती है। ये दोनों एक-दूसरे को निरंतर प्रभावित करते रहते

हैं। परिणामतः प्रत्येक राष्ट्र की शिक्षा नीति मूलतः 'सांस्कृतिक नीति' का रूप ले लेती है।

'शिक्षा और संस्कृति' के परस्पर संबंध को शिक्षा के तत्व-मीमांसीय रूप में देखा जा सकता है। शिक्षा का एक प्रमुख प्रयोजन संस्कृति का विकास है तो संस्कृति का प्रयोजन क्या हो सकता है या संस्कृति के प्रयोजन का आधार क्या है? स्पष्ट है कि किसी भी संस्कृति के केंद्रीय प्रेरक तत्व या मूलभाव की पहचान का एक स्रोत उसकी सृष्टि परिकल्पना है। आदिम स्तर से लेकर सभ्यतम् स्तर तक विभिन्न समाजों में जगत् की सृष्टि को लेकर अपनी अलग-अलग परिकल्पनाएँ विकसित हुई हैं और उन समाजों की जीवन-दृष्टि और जीवन-यापन की पद्धति पर इन परिकल्पनाओं का व्यापक प्रभाव रहता है। (संस्कृति का व्याकरण, पृ. सं. 129)

सामाजिक दृष्टि से देखें तो अपने समाज में रहने के लिए बच्चे का समाजीकरण होना आवश्यक कार्य है। अन्ततः बच्चे को समाज में ही जीना है। समाज में जीने का अभिप्राय है कि वह समाज के नियमों-उपनियमों, जीवन-शैली, कला, रहन-सहन के ढंग आदि से परिचित होकर समाज का अभिन्न अंग बनकर एक सक्रिय व उपयोगी सदस्य बन कर रह सके। अतः बच्चे का सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समाजीकरण करना शिक्षा का आवश्यक कार्य है। समाज आर्थिक, राजनीतिक आदि इकाईयों का समूह है। ये संस्कृति के भी आवश्यक तत्व हैं। बच्चे को इन तत्वों से परिचित कराना अनिवार्य कार्य है। मूल रूप से किसी भी समाज की ज़रूरतों और भावनाओं का संबंध संस्कृति से ही है। संस्कृति की प्रकृति (स्वभाव) गतिशील होने के कारण नवीन व पुरातन के

बीच एक द्वन्द्व या संघर्ष की स्थिति लगभग लगातार बनती रहती है। शिक्षा को इसी से जूझना होता है, जिसके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की जानकारी अनिवार्य तत्व है। के.जी. सैय्यदैन (1963) का मानना है कि, “आधुनिक शिक्षा की कमजोरियों को परखने के लिए हमें अपने देश की संस्कृति का अध्ययन करके एक स्तर निर्धारित करना पड़ेगा। ताकि यह पता लग सके कि हमारी शिक्षा हमारी राष्ट्रीय आवश्यकताओं और भावनाओं के साथ किस सीमा तक मेल खाती है; और कहाँ तक नहीं।” वे फिर लिखते हैं कि, “यदि खराबियों को समझने के लिए पैनी दृष्टि, गहन विचारशीलता, इतिहास से परिचय और संस्कृति का अध्ययन आवश्यक है, तो सुधार और संशोधन के सुझाव पेश करने के लिए उन सभी बातों के अतिरिक्त ऐसी कल्पनाशीलता की आवश्यकता भी है जो एक आँख से भूतकाल और वर्तमान के विभिन्न दृश्यों का अवलोकन कर सके और दूसरी से उन विभिन्न प्रवृत्तियों को भी देख सके जो भविष्य के धुंधलके में छिपी हुई हैं।” (सैय्यदैन, 1963)

शिक्षा के सामाजिक सरोकार

शिक्षा व्यवस्था उस समाज से अलग होकर काम नहीं कर सकती, जिसका वह एक भाग है। समाज में फैले जातिगत, आर्थिक तथा लैंगिक पदानुक्रम, सांस्कृतिक विविधता तथा असमान विकास से शिक्षा की प्राप्ति और विद्यालयों में बच्चों की सहभागिता प्रभावित होती रहती है। विभिन्न सामाजिक व आर्थिक समुदायों के बीच जो गहरी विषमता दिखाई देती है, उससे यह प्रतिबिम्बित होता है कि विद्यालयी व्यवस्था स्वयं में कई स्तरों पर बंटी हुई है और बच्चों को असाधारण रूप से अलग-अलग शैक्षिक

अनुभव देती है। असमान संबंध न केवल वर्चस्व को बढ़ावा देते हैं, अपितु तनाव भी पैदा करते हैं तथा मानवीय क्षमताओं के पूर्ण विकास की स्वतंत्रता में बाधा भी पहुँचाते हैं। (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, पृ. सं. 10)

शिक्षा-व्यवस्था को ‘स्वयं में एक समस्या’ मानते हुए डॉ. श्यामचरण दूबे (2006) कहते हैं कि शिक्षा में व्यापक सामाजिक उद्देश्यों का पुनर्निवेश आवश्यक है। निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें कुशल और कारगर रणनीति भी बनानी होगी। शिक्षा को भविष्योन्मुखी करना ज़रूरी है, क्योंकि आज की राजनीतिक और सांस्कृतिक अराजकता हमें मानव की नियति के संबंध में आश्वस्त नहीं करती।

समाज और शिक्षा के परस्पर संबंधों को एक-दूसरे के आधार के रूप में देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का प्रारंभिक अनुच्छेद इसी तथ्य को प्रकट करता है— “तदनुसार मानव के इतिहास के आदिकाल से शिक्षा का अनेक तरह से विकास और प्रसार होता रहा है। प्रत्येक देश अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्ति देने और पनपाने के लिए और साथ ही समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी विशिष्ट शिक्षा-प्रणाली विकसित करता है। लेकिन देश के इतिहास में कभी-कभी ऐसा समय आता है, जब मुद्दों से चले आ रहे उस सिलसिले को एक नई दिशा देना बहुत ज़रूरी हो जाता है। आज वही समय है।”

असल में सामाजिक परिस्थितियों को छोड़कर शिक्षा की कल्पना भी दूर होती, क्योंकि शिक्षा प्रक्रिया में प्रयोग में लाई जाने वाली सारी सामग्री समाज से ही आती है, (डीवी, 2005)। भारतीय परिस्थितियों में शिक्षा भारतीय समाज के स्वरूप को

निर्धारित करने वाले संविधान संबंधी एक आवश्यक और कानूनी ज़िम्मेदारी है न कि केवल एक नैतिक प्रक्रिया। किसी भी कल्याणकारी राज्य का यह अनिवार्य एवं अपरिहार्य अंग है। इतना होते हुए भी पाया जाता है कि समाज में फैली असमानता, सामाजिक भेद-भाव, रूढ़ियों, संप्रान्त वर्ग के प्रभाव आदि से शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया भी पूरी तरह प्रभावित है। सामाजिक स्तर पर शिक्षा समाज को अनेक स्तरों पर विभाजित-सी करती दिखाई देती है। स्वाधीनता के बाद शिक्षा को एक सामाजिक-क्रांति के रूप में देखा गया। जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में, “अपने अंतिम विश्लेषण के रूप में योजनाओं को जिस समस्या का सामना करना पड़ रहा है, वह है इन्हें जन-समुदाय के हृदय के साथ जोड़ना। इस कार्य को करने का सर्वाधिक उपयुक्त मार्ग है, शिक्षा की प्रक्रिया व विशिष्ट प्रशिक्षण...में पिछड़े हुए देशों में, योजनाओं के कार्य के भविष्य को, शिक्षा के प्रसार के बिना नहीं देख पा रहा।” (बॉउल्स, 2011)

मानव-समाज और शिक्षा के संबंध को स्पष्ट करते हुए विचार किया गया कि मानव के इतिहास में शिक्षा मानव-समाज के विकास के लिए एक सतत प्रक्रिया और आधार रही है तथा इसे अपने स्वरूप, उद्भव एवं प्रकार्य की दृष्टि से सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखा गया। शिक्षा के विषय में यह विचार नहीं किया जा सकता कि वह उस समाज से पूर्णतया भिन्न या स्वतंत्र होगी, जो उसका पोषण करता है। शिक्षा और समाज के आपसी संबंधों की दृष्टि से समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण इसी बात पर बल देता है कि बच्चों के विकास पर उसके समाज तथा उसकी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में ही विचार होना चाहिए।

शिक्षा और अभिभावकों का संबंध भी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अभिभावक भी उसी समाज का एक अभिन हिस्सा हैं। इस संदर्भ में डॉ. पवन सिन्हा का कहना है कि “स्कूल ओनरशिप” ही यही है जहाँ अभिभावक यह अनुभूत कर सकें कि स्कूल उनका भी है, उनकी भी ज़िम्मेदारी है। उनका भी ‘अधिकार’ है। बच्चों की शिक्षा में अभिभावक एक अभिन्न हिस्सा हैं। माता-पिता होने के नाते, समाज का सक्रिय सदस्य होने के नाते, देश का नागरिक होने के नाते। हर रूप में अभिभावकों का दायित्व और जवाबदेही बनती ही है। इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता और ना ही किया जाना चाहिए। मैं अभिभावकों को एक और दृष्टि से शिक्षा-व्यवस्था में महत्वपूर्ण मानता हूँ और वह यह कि अभिभावक ही एक ऐसा प्राणी है जो स्कूल के ‘भीतर’ भी है और ‘बाहर’ भी। स्कूल के भीतर बच्चों के माध्यम से, शिक्षक-अभिभावक की बैठकों के माध्यम से, विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्य के रूप में और स्कूल के ‘बाहर’ समुदाय के सदस्य के रूप में, स्कूल के बाहर खोमचा लगाने वाले, बच्चों को रिकशा से स्कूल छोड़ने वाले, बच्चों को खिलौने, गुब्बारे देने वाले, दुकान से सामान देने वाले, बच्चों का इलाज करने वाले, बच्चों की सुरक्षा का प्रबंध करने वाले व्यक्ति के रूप में आदि-आदि।” (शिक्षा के द्वंद्व, पृ. सं. 85)

विकास किसी भी समाज की स्वाभाविक क्रिया है। जहाँ यह एक ओर सहज होता है, वहीं दूसरी ओर सूझबूझ के साथ शुरू की गई योजनाओं का परिणाम होता है।

प्रत्येक बहु-सांस्कृतिक समाज की आवश्यकताएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं परंतु साधनों के सीमित होने के कारण समाज को अपनी प्राथमिकताएँ

निर्धारित करनी होती हैं। साथ ही यह भी देखना होता है कि उन कार्यों के लिए जनशक्ति को भी कैसे तैयार करना होगा। इन दोनों कार्यों के लिए एक ओर शिक्षा को अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करनी होगी तो दूसरी ओर इस कार्य को पूरा करने के लिए शिक्षा को अपना कार्य क्षेत्र भी बदलना होगा। इस तरह शिक्षा और समाज का आपस में अंतःसंबंध है।

शिक्षा के रूप को समझने के लिए समाज को समझना आवश्यक है तो समाज को समझने के लिए शिक्षा की रूपरेखा को समझना आवश्यक है। प्रमुख इन दोनों के आपसी संबंधों को कई आयामों से देखा जा सकता है। पहले हम इसे दो रूपों में बाँट सकते हैं—

शिक्षा पर समाज का प्रभाव

इसके अंतर्गत हम यह देखते हैं कि समाज की विभिन्न इकाइयों (जैसे— आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी व वैज्ञानिक आदि), मूल्यों, आदर्शों, लक्ष्यों, जरूरतों, समस्याओं, बदलावों आदि का शिक्षा से जुड़ी इन संकल्पनाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है। जैसे—

- शिक्षा का अर्थ या लक्ष्य या उद्देश्य या कार्य
- पाठ्यचर्या या पाठ्यक्रम या पाठ्यसामग्री
- छात्र, अध्यापक, अभिभावक तथा समाज के दूसरे लोगों आदि के आपसी संबंध
- शिक्षा की योजनाएँ
- शैक्षिक वातावरण
- विद्यालयों का स्वरूप
- शिक्षा और समाज
- सीखना, सिखाना, निदेशन, दंड, पुरस्कार आदि जैसी शिक्षा की मूल संकल्पनाएँ।

सार रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा की पूरी प्रक्रिया समाज की अन्य प्रक्रियाओं से लगातार प्रभावित होती रहती है।

समाज पर शिक्षा का प्रभाव

जिस तरह से समाज का शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार शिक्षा भी समाज को प्रभावित करती है। इसके अंतर्गत मुख्य रूप से अग्रलिखित पक्ष देखे जा सकते हैं—

- समाज के विकास की दिशा शिक्षा से ही तय होती है
- समाज के परिवर्तन का स्वरूप या नियंत्रण
- मूल्य, आदर्श और जीवन-शैली
- संस्कृति का रूप, शोधन और हस्तांतरण
- सामाजिक इकाइयों (जैसे— परिवार, समुदाय) का संगठन, रूप व परिवर्तन
- सामाजिक विघटन
- सामाजिक समस्याएँ, कारण व समाधान
- सामाजिक परिवेश
- सामाजिक और जातीय समीकरण
- समता और विषमता
- सामाजिक विचार एवं संरचना
- सामाजिक समूहीकरण-स्वरूप, प्रकार, परिवर्तन आदि
- समाजीकरण की प्रक्रिया (समाज की विभिन्न इकाइयों का)
- अर्थव्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक प्रणाली, ऐतिहासिक तत्वों के आपसी संबंध, मूल्य, आदर्श, अंतःक्रिया, बदलाव, प्रभाव अलग-अलग तरह के राज्य के रूप व उनका अपनी इकाइयों से संबंध समाज के लोगों की

अपनी-अपनी भूमिका, आपसी संबंध, अलगाव, टकराव आदि।

स्पष्ट है कि शिक्षा एक सामाजिक उप-व्यवस्था के रूप में सामाजिक परिवर्तन करती है। अपने इस प्रमुख कार्य के लिए यह समाज की अन्य उप-व्यवस्थाओं से भी निरंतर प्रभावित होती रहती है। इनमें से कुछ प्रमुख कारक हैं—

- सामाजिक
- राजनीतिक
- आर्थिक
- तकनीकी व वैज्ञानिक
- सांस्कृतिक।

निश्चित ही ये सभी कारक सामाजिक उप-व्यवस्थाएँ भी हैं। अतः ये उप-व्यवस्थाएँ आपस में व शिक्षा के साथ लगातार अंतःक्रिया करते हुए अपने सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्य की पूर्ति करती हैं तथा साथ ही साथ बदले हुए समाज से प्रभावित भी होती रहती हैं।

शोध उद्देश्य

“देवबंद के बहु-सांस्कृतिक समाज का वहाँ के विद्यालयों पर प्रभाव का अध्ययन करना।”

शोध परिसीमन

प्रस्तुत शोध का एकमात्र उद्देश्य बहु-सांस्कृतिक समाज का वहाँ के विद्यालयों पर प्रभाव के अध्ययन के अंतर्गत केवल विद्यालय की दीवारों का अवलोकन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध के लिए शोधकर्ता द्वारा देवबंद नगर का चुनाव किया गया। शोधकर्ता ने काफी समय देवबंद नगर में व्यतीत किया है। यह एक बहु-सांस्कृतिक नगर

है। वहाँ की शिक्षा से जुड़े अनेक सवाल शोधकर्ता के मन में उपजे। देवबंद ऐसी जगह है, जहाँ बेहद पढ़े-लिखे परिवार भी हैं और ऐसे परिवार भी हैं, जिनमें अभी भी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी देखे जा सकते हैं। यह ऐसी जगह भी है, जहाँ शहरी व्यवस्था भी है और ग्रामीण परिवेश भी; बेहद समृद्ध व्यापारी वर्ग भी है और आर्थिक रूप से संघर्ष करता हुआ वर्ग भी है। यहाँ विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग भी हैं। इसका सीधा प्रतिबिम्बन यहाँ के विद्यालयों, विद्यालयों की दीवारों, प्रार्थना सभाओं, दीनी व दुनियावी तालीम, सांस्कृतिक कार्यक्रमों इत्यादि में दिखता है।

जनसंख्या की दृष्टि से देवबंद कोई बड़ा नगर नहीं है। यह उत्तर प्रदेश के जनपद सहारनपुर का एक छोटा सा नगर है। मिश्रित आबादी वाले इस नगर की आबादी एक लाख के आस-पास है। जनगणना (2011) के अनुसार देवबंद की कुल जनसंख्या 97037 है। इनमें 53538 पुरुष व 43499 महिलाएँ हैं। यहाँ 0-6 वर्ष तक के बच्चों की जनसंख्या 12200 (12.57 प्रतिशत) है। शिशु लिंगानुपात 812 का है, जो उत्तर प्रदेश के लिंगानुपात 912 के मुकाबले बहुत कम है। बाल लिंगानुपात 917 का है, जो प्रदेश के 902 के मुकाबले थोड़ा अधिक है। यहाँ साक्षरता दर 75.23 प्रतिशत है, जो प्रदेश के 67.68 प्रतिशत से अधिक है। महिलाओं की साक्षरता 69.77 प्रतिशत है, जबकि पुरुषों की 79.59 प्रतिशत है। कामकाजी जनसंख्या 24599 (22551 पुरुष व 2008 महिला) है। इनमें 89.91 प्रतिशत पूर्णकालिक व 10.09 प्रतिशत अंशकालिक हैं।

देवबंद का इतिहास गौरवशाली रहा है। प्राचीन, मध्य और आधुनिक, तीनों काल के इतिहास में देवबंद का विशिष्ट महत्व है। वर्तमान में देवबंद

जनपद सहारनपुर की एक तहसील है। सहारनपुर के इस पूरे क्षेत्र को (जिसमें देवबंद भी आता है) इतिहास में अलग-अलग समय में अलग-अलग नामों यथा—उशीनर, बृहर्षि देश, गुजरात, आदि से जाना गया। जबकि देवबंद को वैदिक काल में देववन, फिर देवीवन तथा देववृन्द के नामों से जाना जाता था। इस क्षेत्र पर आर्यों, शान्तनु, विचित्र वीर्य, पाण्डु, धृतराष्ट्र, युधिष्ठिर, परीक्षित, जनमेजय, शतानीक, अश्व मेधज, असीमकृष्ण, नेमिचक्र (निचक्र), प्रसेनजीत, महापदमनंद, सम्राट अशोक, सिकंदर लोदी, अकबर आदि राजाओं ने अलग-अलग समय में शासन किया है।

यहाँ इस्लामिक शिक्षा प्रदान करने वाला शिक्षण संस्थान 'दारुल उलूम' (शाब्दिक अर्थ— शिक्षा का घर) स्थित है। दारुल उलूम को दुनियाभर के मुस्लिम आदर्श मानते हैं। दारुल उलूम केवल विश्वविद्यालय नहीं है, अपितु एक विचारधारा है जो इस्लाम धर्म के विशुद्ध मूल सिद्धांतों को प्रसारित करता है। इसलिए मुस्लिमों में इस विचारधारा को मानने वाले मुस्लिमों को 'देवबंदी' कहा जाता है। देवबंद इस्लामिक शिक्षा व दर्शन के प्रचार व प्रसार के लिए पूरे विश्व में विख्यात है। देवबंद में छोटे-बड़े सभी मदरसों को मिलाकर करीब दो सौ मदरसे हैं। इनमें से जो उत्तर प्रदेश मदरसा बोर्ड से मान्यता प्राप्त हैं, उनमें उत्तर प्रदेश शासन की ओर से विज्ञान व गणित के शिक्षकों की व्यवस्था की गई है। देवबंद में बालिकाओं के लिए भी मदरसे खोले गए हैं। देवबंद में संस्कृत विद्यालय श्री देवीकुण्ड संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा श्री देवीकुण्ड संस्कृत महाविद्यालय भी है। इसकी स्थापना सन् 1915 में प्रेमानन्द वानप्रस्थी ने की थी। इसे उत्तर प्रदेश संस्कृत माध्यमिक शिक्षा परिषद्

व सम्पूर्णानंद विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। देवबंद में 'जामिया तिब्बिया यूनानी चिकित्सा शिक्षा संस्थान' स्थित है। जहाँ यूनानी चिकित्सा की स्नातक व स्नातकोत्तर (BUMS और MD) की शिक्षा दी जाती है। 'चरक चिकित्सा शिक्षा संस्थान' भी स्थित है, जहाँ चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े विभिन्न पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। ये दोनों संस्थान ही अल्पसंख्यक दर्जे में आते हैं।

इनके अतिरिक्त यहाँ नौ उच्च शिक्षा संस्थान (चार अल्पसंख्यक) हैं, इनमें केवल दो में स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा दी जाती है। इनमें से चार महाविद्यालयों में बी.एड. व बी.टी.सी. पाठ्यक्रम भी संचालित किए जाते हैं। देवबंद में लगभग 20 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हैं जिनमें कक्षा 12 तक की शिक्षा दी जाती है। इनमें अधिकतर उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा, इलाहाबाद से संबद्धित हैं। कुछ सी.बी.एस.सी. बोर्ड से संबद्धित हैं। एक विद्यालय उत्तर प्रदेश संस्कृत माध्यमिक शिक्षा परिषद् से संबद्धित है।

देवबंद कई मायने में अपनी अलग पहचान लिए हुए है। यहाँ का सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक वातावरण अन्य जगहों से बिल्कुल अलग है। देवबंद में 20 मान्यता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हैं।

शोधकर्ता ने देवबंद के बहु-सांस्कृतिक समाज का विद्यालयों पर प्रभाव देखने के उद्देश्य से विद्यालय की दीवारों का अवलोकन करने को महत्वपूर्ण मानते हुए, इसे शोध के उद्देश्य के रूप में चुना।

न्यादर्श

शोध व शोधार्थी की अपनी कुछ सीमाएँ होती हैं जिसके चलते अध्ययन हेतु आँकड़ों का संग्रहण करने

के लिए सम्पूर्ण शोध-क्षेत्र के स्थान पर उसमें से कुछ क्षेत्र चयन किया जाता है। यह चयनित क्षेत्र सम्पूर्ण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसा करने से शोध के उद्देश्यों को गहनता से अध्ययन कर प्राप्त किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध के लिए शोधार्थी द्वारा आँकड़े एकत्रित करने के लिए जिस क्षेत्र (बहु-सांस्कृतिक समाज) का चयन किया गया है, उसमें अर्थात् देवबंद में कुल 20 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हैं। समय और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर शोधार्थी के लिए सभी विद्यालयों से उद्देश्यानुसार आँकड़े एकत्रित करना संभव नहीं था। इसलिए शोधार्थी द्वारा आँकड़े एकत्रित करने के लिए देवबंद के छः उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का चयन किया गया। इन विद्यालयों का चयन सोद्देश्य न्यादर्श चयन विधि के आधार पर किया गया।

विद्यालय चयन के आधार

आँकड़ों के संग्रहण के लिए न्यादर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा कई आधारों पर विद्यालयों का चयन किया गया। विद्यालय चयन के आधार निम्नलिखित हैं—

- वर्ग के आधार पर (बालिका वर्ग/सह-शिक्षा वर्ग)
- विद्यालय प्रबंधन के आधार पर
- अनुदान के आधार पर (सरकारी/गैर-सरकारी)

सामान्यतः विद्यालय तीन वर्ग में विभक्त किए जा सकते हैं— पहला बालक वर्ग, दूसरा बालिका वर्ग व तीसरा सह-शिक्षा वर्ग। परंतु उत्तर प्रदेश में दो वर्गों के ही विद्यालय संचालित किए जाते हैं— एक बालिका वर्ग व दूसरा सह-शिक्षा वर्ग। उत्तर प्रदेश शासन ने बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए लगभग दो दशक पूर्व सभी बालक वर्ग के विद्यालयों में बालिकाओं का भी प्रवेश करने का

प्रावधान बनाया था जिसके चलते अब उत्तर प्रदेश में उपरोक्त दो वर्गों के ही विद्यालय संचालित किए जाते हैं। जिन विद्यालयों को बालक वर्ग में मान्यता प्राप्त है, वे भी सह-शिक्षा वर्ग में संचालित किए जा रहे हैं। इस प्रकार देखा जाए तो देवबंद में जो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हैं, उनमें से तीन विद्यालय बालिका वर्ग के हैं, शेष 17 विद्यालय सह-शिक्षा वर्ग में रखे जा सकते हैं।

विद्यालय प्रबंधन समिति के आधार पर देवबंद के विद्यालयों को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। इनमें एक वह विद्यालय है जो गैर-अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा संचालित किए जाते हैं। दूसरे वह विद्यालय हैं जो मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय के द्वारा संचालित किए जाते हैं। तीसरे वह विद्यालय हैं, जिनका संचालन जैन अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा किया जाता है। चौथा तथा अंतिम विद्यालय किसी संचालन समिति द्वारा संचालित नहीं किया जाता, बल्कि जिला विद्यालय निरीक्षक स्वयं इस विद्यालय का संचालक हैं।

विद्यालय को मिलने वाले अनुदान के आधार पर देवबंद के विद्यालयों को मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। एक सरकारी अर्थात् अनुदानित दूसरे गैर-सरकारी अर्थात् गैर-अनुदानित। अनुदानित, विद्यालयों (सरकारी विद्यालयों) में भी दो प्रकार के विद्यालय हैं, एक पूर्ण वित्त-पोषित विद्यालय तथा दूसरा अर्द्ध वित्त-पोषित विद्यालय।

आँकड़ों के संग्रहण हेतु जिन उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है उनका विवरण निम्नलिखित तालिका संख्या 1 के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

तालिका 1— न्यादर्श के रूप में चुने गए विद्यालयों का विवरण

क्र.सं	विद्यालय	वर्ग	प्रबंधन	अनुदान
1.	राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज	बालिका	जिला विद्यालय निरीक्षक	वित्त-पोषित
2.	इस्लामिया इण्टर कॉलेज	सह-शिक्षा	मुस्लिम अल्पसंख्यक	अर्द्ध वित्त-पोषित
3.	एच. ए. वी. इण्टर कॉलेज	सह-शिक्षा	गैर-अल्पसंख्यक	अर्द्ध वित्त-पोषित
4.	श्री जैन इण्टर कॉलेज	सह-शिक्षा	जैन अल्पसंख्यक	अर्द्ध वित्त-पोषित
5.	पब्लिक गर्ल्स इण्टर कॉलेज	बालिका	मुस्लिम अल्पसंख्यक	वित्त-विहीन
6.	द दून वैली पब्लिक स्कूल	सह-शिक्षा	गैर-अल्पसंख्यक	वित्त-विहीन

तालिका 1 में स्पष्ट है कि जिन छः विद्यालयों का चयन किया गया है उनमें राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज बालिका वर्ग का शासन द्वारा वित्त-पोषित विद्यालय है तथा इसके प्रशासक उत्तर प्रदेश शासन द्वारा नियुक्त जनपद सहारनपुर के जिला विद्यालय निरीक्षक हैं। वही विद्यालय के नीतिगत निर्णय राज्य सरकार की नीतियों के अनुसार लेते हैं। विद्यालय की प्रधानाचार्या उन्हीं के अनुसार विद्यालय प्रबंधन का कार्य संभालती हैं। इस्लामिया इण्टर कॉलेज सह-शिक्षा वर्ग का शासन द्वारा अर्द्ध वित्त-पोषित विद्यालय है तथा इसका संचालन मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा किया जाता है। एच. ए. वी. इण्टर कॉलेज सह-शिक्षा वर्ग का शासन द्वारा अर्द्ध वित्त-पोषित विद्यालय है, जिसका संचालन गैर-अल्पसंख्यक समुदाय के द्वारा किया जाता है। श्री जैन इण्टर कॉलेज सह-शिक्षा वर्ग का शासन द्वारा अर्द्ध वित्त-पोषित विद्यालय है तथा इसका संचालन जैन अल्पसंख्यक समुदाय के द्वारा किया जाता है।

न्यादर्श के रूप में चयनित इन अर्द्ध वित्त-पोषित विद्यालयों का संचालन तो समिति द्वारा होता है, परंतु विद्यालय में काम करने वाले सभी शिक्षक व कर्मचारियों के वेतन सहित समस्त आर्थिक व्यय राज्य

सरकार द्वारा वहन किया जाता है। पब्लिक गर्ल्स इण्टर कॉलेज बालिका वर्ग का वित्त-विहीन विद्यालय है तथा इसका संचालन मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्यों द्वारा बनाए गए ट्रस्ट मुस्लिम फण्ड के माध्यम से किया जाता है। द दून वैली पब्लिक स्कूल सह-शिक्षा वर्ग का वित्त-विहीन विद्यालय है, जिसका संचालन गैर-अल्पसंख्यक समुदाय के द्वारा किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित इन वित्त-विहीन विद्यालयों में सीधे तौर पर राज्य सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं है।

आँकड़ों का संग्रहण

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आँकड़ों के संग्रहण और उन्हें पुष्टा करने के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

असंरचित साक्षात्कार

शोध के उद्देश्य बहु-सांस्कृतिक समाज के विद्यालय पर प्रभाव को जानने के लिए विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से असंरचित साक्षात्कार किए गए। विद्यालय की दीवार पर जो कुछ भी प्रदर्शित किया गया है उसका समाज से कोई लेना-देना है भी अथवा नहीं; इसकी पुष्टि के लिए शोधार्थी द्वारा समुदाय के सदस्यों (विद्यालय प्रबंध

समिति) से भी साक्षात्कार के किए गए। समुदाय के सदस्यों से साक्षात्कार के लिए असंरचित साक्षात्कार का प्रयोग किया गया।

विद्यालयों का अवलोकन

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध के उद्देश्य बहु-सांस्कृतिक समाज के विद्यालय पर प्रभाव को जानने के लिए विद्यालयों का असहभागी अवलोकन भी किया गया। यह अवलोकन इस संदर्भ में भी किया गया कि विद्यालयों के प्रधानाचार्यों और समाज के सदस्यों (विद्यालय प्रबंध समिति) के द्वारा दी गई जानकारी की पुष्टि की जा सके और उनके द्वारा दी गई जानकारी को और गहराई से खंगाला जा सके। अवलोकन के दौरान विद्यालय पर बहु-सांस्कृतिक समाज के प्रभाव के रूप में वहाँ की दीवारों का विद्यालय द्वारा किस प्रकार इस्तेमाल किया गया है; इसकी पड़ताल की गई।

आँकड़ों का विश्लेषण

विद्यालय एक लघु समाज है और समाज एक महाविद्यालय है (डीवी, 2005)। ये दोनों परस्पर भिन्न प्रतीत होते हुए भी, मूलतः अभिन्न है। शिक्षा और समाज के इन्ही सम्बंधों को ध्यान में रखते, इस पत्र के उद्देश्य-पूर्ति हेतु विद्यालयों के प्रधानाचार्य और समाज के प्रतिनिधियों के तौर पर विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों से साक्षात्कार किये गये। साक्षात्कार के आधार पर कहा जा सकता है कि जैन अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा संचालित विद्यालय में जैन धर्म से जुड़े चिन्हों को प्रस्तुत करने पर जोर दिया जाता है, हालांकि जैन अल्पसंख्यक विद्यालय में एक भी विद्यार्थी जैन समुदाय का नहीं है। वहीं मुस्लिम अल्पसंख्यक विद्यालय में इस्लाम से जुड़ी इबारते ही वहाँ लिखी मिलती हैं और

वे केवल इस्लाम में प्रचलित चीजों को ही विद्यालय में स्थान देना चाहते हैं। शिक्षा और समाज के सदस्यों से किये गये साक्षात्कार के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यालय में जिस संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है, वह सम्पूर्ण समाज को प्रतिबिम्बित नहीं करती है। विद्यालय जिस समाज में का हिस्सा वह समाज तो बहु-सांस्कृतिक है, परन्तु विद्यालय बहु-सांस्कृतिक प्रतीत नहीं होता है। विद्यालय में विद्या ग्रहण करने वाले सभी विद्यार्थियों की संस्कृति से विद्यालय और विद्यालय प्रबंध समिति को कोई सरोकार है, ऐसा प्रतीत नहीं होता है।

विद्यालय की दीवार के इस्तेमाल को लेकर अनेक विद्वानों द्वारा कई युक्तियाँ सुझाई गई हैं। देवबंद के कुछ विद्यालयों की दीवार पर धार्मिक सांस्कृतिक की छाप देखने को मिलती है। अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि मुस्लिम अल्पसंख्यक विद्यालयों में दीवारों पर इस्लाम धर्म से संबंधित विचार लिखे गए हैं। इन विद्यालयों में कुछेक जगह कुछ प्रेरणादायी वाक्य भी लिखे गए हैं। मुस्लिम अल्पसंख्यक विद्यालय की दीवारों पर हरे रंग का वर्चस्व देखने को मिलता है। साथ ही इनमें जो हिंदी माध्यम के विद्यालय हैं उनमें जो भी विचार दीवार पर लिखे गए हैं, वे या तो केवल उर्दू में लिखे गए हैं या फिर हिंदी व उर्दू में लिखे गए हैं। जबकि मुस्लिम अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में दीवार पर लिखे गए विचार अंग्रेजी व उर्दू में हैं। इन विद्यालयों की दीवारों पर लिखे गये कुछ विचार हैं—

- इल्म हासिल करो गोद से गौर तक
- माँ का हक़ बाप से तीन गुना ज़्यादा है।

- चिराग जिस तरह जलाए बगैर रोशनी नहीं देता इल्म भी बगैर अमल के फायदा नहीं देता।
- कामयाबी का सबसे बड़ा राज खुदएतमादी में है।
- फतह उम्मीद से नहीं इल्म और अल्लाह पर एतमाद से हासिल होती है।
- मेहनत करने वाला व्यक्ति ज़िंदगी में हमेशा कामयाब रहता है।

जैन अल्पसंख्यक विद्यालय की दीवार पर महावीर स्वामी का चित्र बनाया गया है। जबकि इस विद्यालय की दीवार पर णमोकार महामंत्र को भी स्थान दिया गया है। साथ ही 'जियो और जीने दो' भी जैन अल्पसंख्यक विद्यालय की दीवार पर लिखा गया है।

इनके अलावा गैर-अल्पसंख्यक विद्यालयों की दीवारों पर किसी भी धर्म व संस्कृति की छाप देखने को नहीं मिलती है। उनकी दीवारों पर देश के महान व्यक्तियों और देश-विदेश के साहित्यकारों के सुविचार लिखे गए हैं। इन विद्यालयों की दीवारों पर लिखे गए कुछ विचार इस प्रकार हैं—

- अज्ञान से बढ़कर कोई अंधकार नहीं— शेक्सपीयर
- बानी ऐसी बालिये, मन का आपा खोया औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय—रहीमदास
- जो अवसर को समय पर पकड़ ले, वही सफल होता है— गेटे
- आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है— स्वेट मार्टेन
- अच्छे कार्य, जो छिपाकर किए जाते हैं, सबसे अधिक आदर के पात्र हैं— पास्कल
- आत्मविश्वास रखो कि तुम पृथ्वी पर सबसे महत्वपूर्ण हो— गोर्की

- कोई भी ऐसा मनुष्य साहसी नहीं होता जो पीड़ा को जीवन की सबसे बड़ी बुराई समझता है— सिसरो
- प्रयत्नशील व्यक्तियों के लिए आशा सदैव जीवित रहती है— मैथिलीशरण
- कर्म के दर्पण में व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब झलकता है— विनोबा भावे
- विश्वास एवं लगन के बिना किया गया कार्य कागज के फूल की तरह है, जिसमें कोई सुगंध नहीं होती— महात्मा गांधी
- ईमानदार का हर काम खुलेआम होता है—चाणक्य

दिए गए विचारों के अलावा नगरपालिका द्वारा सरकार के विभिन्न अभियानों को चित्रित करने के लिए भी विद्यालय की दीवार का इस्तेमाल किया गया है।

नगर के एक विद्यालय की किसी भी दीवार पर किसी भी प्रकार के विचारों को नहीं लिख गया है। इस वित्त-विहीन विद्यालय का संचालन गैर-अल्पसंख्यक समुदाय के व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। इस विद्यालय में दीवार का इस्तेमाल अधिगम को बढ़ावा देने वाले एक संसाधन के रूप में किया गया है। इसकी दीवारों पर विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा किए गए अकादमिक कार्यों को प्रदर्शित किया गया है। इस विद्यालय की दीवारों का लुक समय-समय पर बदलता रहता है। इस विद्यालय की एक दीवार का नाम वॉल ऑफ विजडम रखा गया है। साथ ही दीवारों पर विद्यालय के सफल विद्यार्थियों की तस्वीरें भी लगाई गई हैं।

सभी विद्यालयों में एक समानता यह मिली कि सभी विद्यालयों ने अपने विद्यालय की दीवार के एक हिस्से को विद्यालय के हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट के

सफलतम विद्यार्थियों के नाम कर रखा है। दीवार पर एक बोर्ड के माध्यम से वर्षवार हाईस्कूल व इंटरमीडिट बोर्ड परीक्षा में विद्यालय के सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का नाम सूचीबद्ध किया हुआ है।

निष्कर्ष

डुप्रीज और डुमा (2006) कहते हैं कि समाज का विद्यालय पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। समाज में उपस्थित असमानता का प्रभाव विद्यालय में भी देखने को मिल सकता है। देवबंद के बहु-सांस्कृतिक समाज का भी वहाँ के विद्यालयों पर प्रभाव देखने को मिलता है। विद्यालय की दीवार के इस्तेमाल को लेकर अनेक विद्वानों द्वारा कई युक्तियाँ सुझाई गई हैं। कुछ विद्यालय दीवार का इस्तेमाल अपने मिशन और विज्ञान को प्रदर्शित करने में करते हैं तो कुछ शैक्षिक विचारों को उकेरने में करते हैं। विद्यालयों द्वारा दीवार का इस्तेमाल अधिगम के संसाधन के रूप में भी किया जाता है और विद्यार्थियों की उपलब्धियों को दर्शाने में भी। विद्यालय की दीवारों का इस्तेमाल अपनी कला और संस्कृति को उकेरने में भी किया जाता रहा है। जहाँ तक देवबंद के बहु-सांस्कृतिक समाज के विद्यालय की दीवारों पर प्रभाव का सवाल है तो विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि कुछ विद्यालय की दीवार पर धार्मिक-सांस्कृतिक छाप देखने को मिलती है। अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि मुस्लिम अल्पसंख्यक विद्यालयों में दीवारों पर इस्लाम धर्म से संबंधित विचार लिखे गए हैं। इन विद्यालयों में कुछेक जगह कुछ प्रेरणादायी वाक्य भी लिखे गए हैं। मुस्लिम अल्पसंख्यक विद्यालय की दीवारों पर हरे रंग का वर्चस्व देखने को मिलता है जो इस्लाम धर्म में बड़ा महत्व रखता है। साथ ही इनमें जो हिंदी माध्यम

के विद्यालय हैं उनमें जो भी विचार दीवार पर लिखे गए हैं, वे या तो केवल उर्दू में लिखे गए हैं या फिर हिंदी व उर्दू दोनों में लिखे गए हैं। मुस्लिम अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में दीवार पर लिखे गए विचार अंग्रेजी व उर्दू में हैं। वहीं जैन अल्पसंख्यक प्रबंध समिति द्वारा संचालित विद्यालय की दीवार पर महावीर स्वामी का चित्र बनाया गया है और इस विद्यालय की दीवार पर णमोकार महामंत्र को भी स्थान दिया गया है। साथ ही 'जियो और जीने दो' भी दीवार पर लिखा गया है। गौर करने वाला तथ्य यह है कि जैन अल्पसंख्यक प्रबंध समिति द्वारा संचालित विद्यालय में जैन विद्यार्थियों की संख्या नगण्य है। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकतर विद्यालय की दीवारों पर जो भी कुछ उकेरा जाता है उसका इससे कोई लेना-देना नहीं है कि विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का संबंध किस धर्म-संस्कृति से है। बल्कि विद्यालय की दीवार पर उस धर्म-संस्कृति के चिन्ह देखने को मिलेंगे जिससे विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों की धर्म-संस्कृति का संबंध है। परंतु देवबंद के एकमात्र पूर्ण-पोषित विद्यालय (जिसकी कोई प्रबंध समिति नहीं है), जिसका प्रबंधन प्रदेश शासन द्वारा किया जाता है ऐसा है जहाँ किसी धर्म-संस्कृति के स्थान पर विद्वानों के विचार और सरकार की योजनाओं का प्रदर्शन किया गया है। वहीं वित्त-विहीन विद्यालय की दीवारों का इस्तेमाल अधिगम के संसाधन के रूप में किया गया है। इस विद्यालय की दीवार पर अनेक ज्ञानवर्धक तथ्य सृजनात्मक ढंग से लिखे गए हैं।

कुल मिलाकर देवबंद से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यालय की दीवारों का इस्तेमाल अलग-अलग विद्यालयों में तीन

प्रकार से हो रहा है। पहला समुदाय के सांस्कृतिक रूप में और तीसरा केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं प्रतिबिम्बन के तौर पर, दूसरा अधिगम के संसाधन के को प्रदर्शित करने के लिए।

संदर्भ

- आचार्य, नंदकिशोर. 1997. *संस्कृति का व्याकरण*. वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर.
- डीवी, जॉन. 2005. *शिक्षा और समाज*. ग्रन्थ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि., नयी दिल्ली.
- दूबे, श्यामाचरण. 2009. *भारतीय समाज*. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नयी दिल्ली.
- बॉउल्स, सी. 2011. जे. एल. नेहरू इन कन्वर्शेंसन विद सेस्टर बॉउल्स. वॉव पब्लिकेशन, यूएस.
- भारत सरकार. 2011. *जनगणना रिपोर्ट. कार्यालय जनगणना महापंजीयन*. भारत सरकार, नयी दिल्ली.
- भारतीय संविधान*, भारत सरकार. नयी दिल्ली.
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति*. 1986. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.
- राष्ट्रीय शिक्षा आयोग. 1966. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.
- शर्मा, के.के. 1986. *सहारनपुर संदर्भ*. संदर्भ प्रकाशन, सहारनपुर.
- सैय्यदेन, के. जी. 1963. *एजुकेशन, कल्चर एंड सोशियल ऑर्डर*. एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे.
- सिन्हा, पवन. 2019. *शिक्षा के द्वंद्व*. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली.